कैंसर रोग और ज्योतिषीय विश्लेषण

अर्चना गुप्ता
जमशेदपुर, झारखण्ड

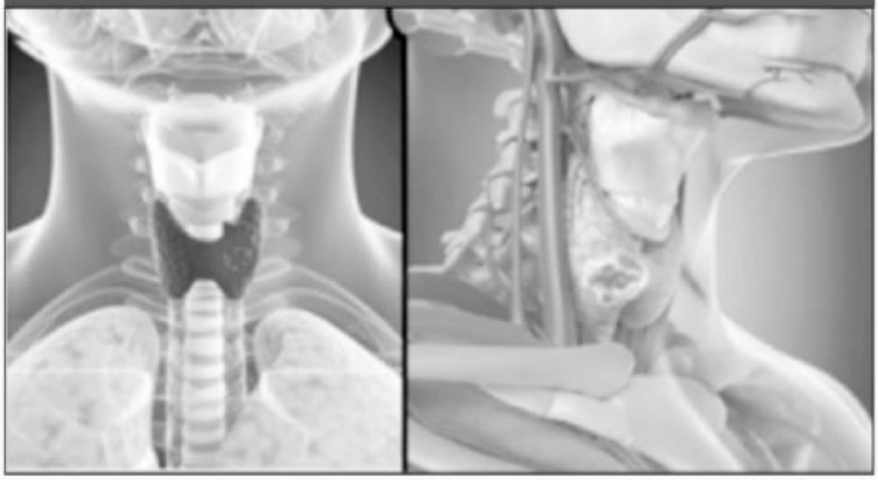

आधुनिक समय में मानव समाज के लिए कैंसर रोग बहुत ही खतरनाक और चिंताजनक समस्या है। हालांकि मेडिकल साइंस ने बहुत प्रगति की है लेकिन कैंसर के मामले में अभी शत-प्रतिशत सफलता नहीं मिली है। कैंसर के कुछ मामलों में प्रारंभिक अवस्था में ऑपरेशन या रेडिएशन द्वारा ठीक किए जाते हैं। लेकिन अधिकांश मामलों में डाक्टर असहाय होते भी देखे गए हैं। अतः आधुनिक ज्योतिषियों का कर्तव्य बनता है कि इस खतरनाक चुनौतीपूर्ण समस्या पर गहराई से विचार कर मानव कल्याण हेतु कुछ नवीन कार्य करें।

कैंसर जैसे भयानक रोगों की उत्पत्ति में कौन-कौन से ग्रहों का प्रभाव रहता है यह जानने से पहले कैंसर के लक्षण को जानना जरूरी है। कैंसर रोग में किसी घाव का ना भरना, बार-बार रक्तस्राव होना, विशेषकर स्त्रियों के मासिक धर्म के बंद हो जाने के बाद ऐसा होता है। गले की खराबी या रोग ठीक होने का नाम ना ले, कोई असाधारण गांठ होना या किसी भाग का बढ़ जाना, स्त्रियों के स्तन में गांठ पड़ जाना, किसी अल्सर के इलाज के बाद भी ठीक ना होना।

मानव शरीर में कैंसर की उत्पत्ति में कोशिकाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। कोशिकाओं में श्वेत एवं लाल रक्त कण होते हैं ज्योतिष में श्वेत रक्त कण को चंद्र तथा कर्क राशि सिग्नीफाई करते हैं तथा लाल रक्त कण को मंगल सिग्नीफाई करते हैं इसीलिए ज्योतिष में कैंसर जैसे भयानक रोग के लिए चंद्र का तथा मंगल का विशेष महत्व है।

कैंसर एक लंबी अवधि तक चलने वाला रोग है। शनि और राहु लंबे समय तक चलने वाले रोग देते हैं इसीलिए इन दोनों ग्रहों की भूमिका भी कैंसर रोग होने में मुख्य होती है क्योंकि बृहस्पति विस्तार का कारक है और कैंसर रोग में कोशिकाओं की अनवरत वृद्धि होती है। कैंसर रोग में बृहस्पति का भी महत्वपूर्ण रोल है। अत- कैंसर रोग का संबंध शनि राहु तथा पीड़ित चंद्र मंगल गुरु से होता है। शरीर में किसी भी प्रकार की रसौली जल से होती है अतः यहां जल तत्व राशियों कर्क वृश्चिक तथा मीन का बहुत महत्व है। कर्क राशि का नाम कैंसर है और इसका चिन्ह में कैकडा है कैकडा की प्रवृत्ति होती है की जिस स्थान को अपने पंजों में जकड़ लेता है उसे अपने साथ लेकर ही छोड़ता है इसी प्रकार कोशिकाएं मानव जीवन के जिस अंग को अपना स्थान बना लेती हैं उसे शरीर से अलग करके ही हटाया जाता है। जल तत्व राशियों के पाप ग्रस्त होने पर कैंसर की संभावना प्रबल हो जाती है। इसके साथ साथ मेष, वृष, तुला, मकर राशियों से भी संबंध देखा गया है।

ग्रहों तथा राशियों के साथ-साथ भावों का भी महत्व होता है। छठा भाव रोग तथा अष्टम भाव दीर्घकालिक रोग के लिए देखा जाता है और बारहवें भाव हॉस्पिटेला इजेशन का है। जन्म कुंडली में जब एक ही भाव पर अधिकतर पाप ग्रहों का प्रभाव हो विशेषकर शनि मंगल राहु का तब उस भाव से संबंधित अंग में कैंसर होने की संभावना बन जाती है।

जब जन्म कुंडली में नेपच्यून व यूरेनस आमने-सामने हो तब इसे अत्यधिक अशुभ माना जाता है।

जब चंद्र, मंगल, गुरु का पीड़ित होना और 6 8 12 भाव और उनके स्वामियों से संबंध बनाएं तथा पीड़ित ग्रहों की दशा आ जाए तब इस रोग के होने की संभावना बनती है। अशुभ ग्रह अथवा रोग कारक ग्रहों की महादशा, अंतर्दशा, प्रत्यंतर दशा हो लग्न /लग्नेश, मेष राशि ,मंगल पर शनि राहु केतु व षष्ठेश का प्रभाव युति दृष्टि द्वारा हो तो जातक को मस्तिष्क का कैंसर ब्रेन ट्यूमर हो सकता है। द्वितीय भाव/ भावेश,वृषभ राशि ,शुक्र पर पापी ग्रहों का प्रभाव हो तो मुंह का कैंसर होता है। द्वितीय भाव पर मंगल और केतु युति दृष्टि प्रभाव डालते हैं तो व्यक्ति तंबाकू चबाने का आदी हो जाता है जिससे कैंसर की संभावना बनती है। दूसरे भाव में शनि राहु हो और चतुर्थ भाव भावेश पर चंद्र पर पापी ग्रहों का प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष प्रभाव हो तो व्यक्ति धूम्रपान का आदी बन जाता है जो आगे चलकर फेफड़े के कैंसर का कारण बनता है। तृतीय भाव में पापी प्रभाव हो तो गले में कैंसर होता है। रक्त कारक ग्रह चंद्र ,मंगल के

ऊपर शनि राहु केतु का अशुभ प्रभाव हो और लगन लग्नेश व पीड़ित हो तो ब्लड कैंसर होता है। पंचम भाव/ भावेश, कारक गुरु, सिंह राशि और सूर्य कमजोर हो और उन पर पापी ग्रह शनि मंगल राहु केतु और षष्ठेश का प्रभाव हो तो एसिडिटी ,अल्सर होकर इंटेस्टाइन में कैंसर की संभावना बन जाती है।

लगन/ लग्नेश पूरे शरीर का प्रतिनिधित्व करती हैं लेकिन शरीर के अलग-अलग हिस्सों की अंदरूनी और बाहरी हिस्सों का विश्लेषण करने के लिए जन्म कुंडली को दो भागों में बांटना जरूरी है। इसमें दाएं और बाएं शरीर के अंगो का विश्लेषण किया जा सकता है। विश्लेषण करने के बाद ही शरीर के उन हिस्सों में बैठे ग्रह का युति/ दृष्टि संबंध से पता लगाया जा सकता है कि कैंसर शरीर के किस अंग को प्रभावित करेगा।

यदि योगकारक ग्रह की दशा हो तो रोग का आरंभ में ही पता चल जाता है और उपचार हो जाता है और यदि अकारक ग्रहों की दशा हो तो जातक की बीमारी का प्रारंभिक अवस्था में डायग्नोज नहीं हो पाता और सही उपचार भी नहीं हो पाता। जन्मकुंडली के साथ-साथ नवांश कुंडली, जन्म में षष्टिआंश कुंडली, त्रिशांश कुंडली का भी भली-भांति विश्लेषण करना चाहिए और उसके बाद किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

ज्योतिष पूर्व जन्म के किए गए कर्मों का आधार है अर्थात ज्योतिष द्वारा हम यह जान सकते हैं कि हमारे पूर्व जन्म के किए गए कर्मों का परिणाम हमें इस किस प्रकार प्राप्त होगा यह किसी रोग के रूप में भी प्राप्त हो सकता है।

ज्योतिष विज्ञान कैंसर सहित अन्य रोगों के पहचानने में भी सहायक होता है तथा इस रोग से इसके साथ साथ यह भी मालूम किया जा सकता है कि रोग किस उम्र में होगा और यह मृत्यु दायी होगा अथवा नहीं अर्थात हमें यह भी ज्ञान

वृश्चिक लग्न की पत्रिका

लग्नेश मंगल अष्टम भाव में वक्री होकर राहु केतु अक्ष पर तृतयेश चतुर्थेश अकारक वक्री शनि के साथ तथा राहु के साथ बैठकर दूसरे भाव पर दृष्टि दे रहे हैं। मारक भाव में बैठे अष्टमेश बुध केतु के साथ। यहां मंगल षष्ठेश भी है। मंगल की दृष्टि काल पुरुष के द्वितीयेश शुक्र पर है तथा राहु की दृष्टि तत्कालिक द्वितीयेश गुरु पर है। इनके कैंसर होने के योग हैं। शनि मंगल राहु की दशा में दिसंबर 2006 से फरवरी 2007 के मध्य इनका मुह का कैंसर डायग्नोज हुआ।

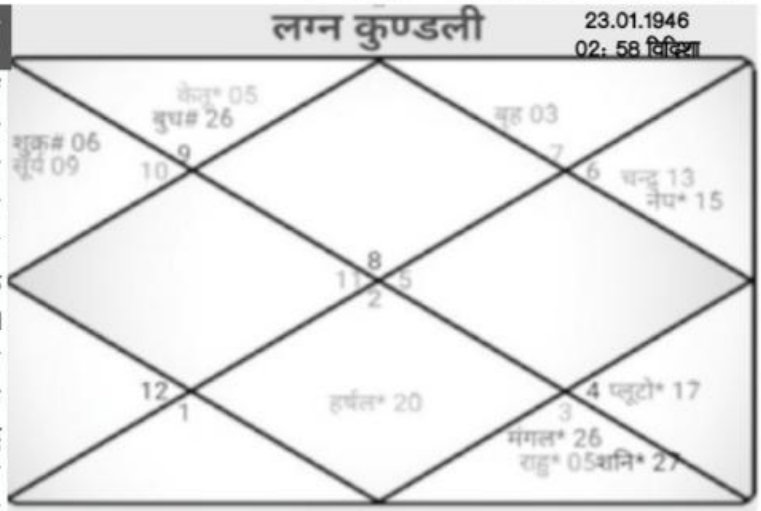

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र (च)
लग्न	वृश्चिक	10:45:04	अनुराधा(3)

कर्क लग्न की पत्रिका

लग्नेश चंद्र छठे भाव में केतु के डिस्पोजिटर एकादशेश शुक्र के साथ। सप्तमेश अष्टमेश शनि बारहवें भाव में वक्री होकर केतु के प्रभाव में आकर लगन को प्रभावित कर रहे हैं। कर्क राशि को प्रभावित कर रहे हैं। तथा मंगल युक्त राहु भी कर्क राशि को प्रभावित कर रहे हैं। षष्ठेश गुरु अष्टम में बैठकर शनि को, बारहवें भाव को और चतुर्थ भाव को प्रभावित कर रहे हैं। इस तरह इस जातिका को ब्रेस्ट कैंसर हुआ।

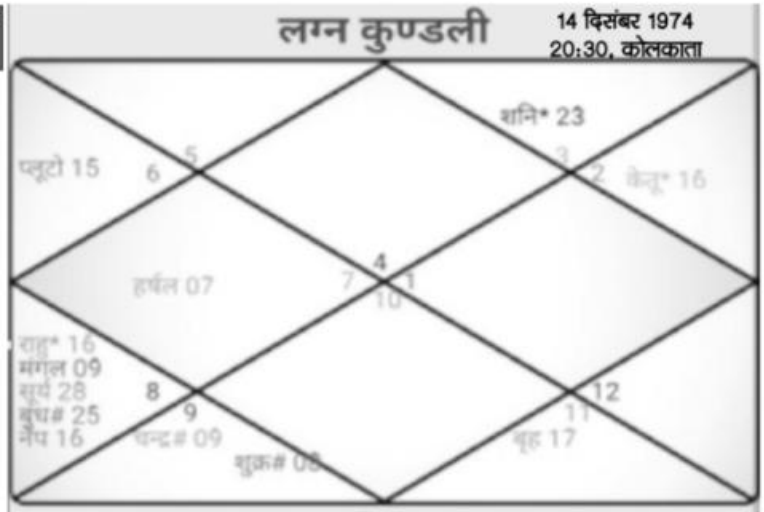

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र (च)
लग्न	कर्क	17:46:34	अश्लेषा(1)

हो सकता है कि यह बीमारी क्योरेबिल है अन्यथा नहीं । समय रहते प्रतिकूल ग्रहों का मंत्र जाप एवं अन्य उपायों द्वारा शांत करके इस रोग की कलिष्टता से बचा जा सकता है। श्री मृतसंजीवनी और श्री महामृत्युंजय मंत्र का जाप व अनुष्ठान कराना चाहिए। श्री मंत्र संजीवनी का जप मृत हो रहे शरीर में भी जान डाल देता है। जिस प्रकार राम रावण युद्ध में मेघनाथ द्वारा चलाए गए शक्ति बाण से लक्ष्मण मृत समान हो गए थे। उस समय हनुमान जी द्वारा लाई गई संजीवनी बूटी का अर्क लक्ष्मण जी को देने पर उन्हें नया जीवन मिला था। इसी तरह महामृत्युंजय जप की महिमा अपरंपार है। यह असाध्य रोग से मुक्ति प्रदान करता है। अकाल मृत्यु से बचने के लिए मे श्री मृत संजीवनी और श्री महामृत्युंजय जप का मंत्र का जप करना चाहिए। यह कैंसर पीड़ित व्यक्ति भी कर सकते हैं या घर के अन्य सदस्य भी कर सकते हैं। यदि घर के सदस्य करने में असमर्थ हो तो श्रेष्ठ ब्राह्मण से भी कराया जा सकता है। अकाल मृत्यु रोधक यंत्र का भी प्रयोग किया जा सकता है। इसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता। भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से दाड़िम की कलम से शुभ मुहूर्त में उक्त मंत्र का निर्माण कर उसकी विधिवत प्राण प्रतिष्ठा करें। फिर ताबे व चांदी के सिद्ध कवच में डालकर मॉम से मुंह को बंद कर दें और लाल धागे के सहारे गले में धारण करें। शिव के पंचाक्षर मंत्र का अनुष्ठान भी दीर्घायु के लिए किया जाता है। इसमें कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों से भगवत कृपा से छुटकारा मिल जाता है। अनुष्ठान के साथ-साथ चिकित्सा भी चालू रखनी चाहिए। चिकित्सा के साथ-साथ मंत्र चिकित्सा करने से चमत्कारी ढंग से फल मिलते हैं।इससे व्यक्ति के संचित पाप नष्ट होते हैं और रोग से निवृत्ति हो जाती है। सभी आयु वर्ग तथा स्त्री पुरुषों के लिए समान रूप से सिद्धि दायक है। घी का दीपक जलाकर रुद्राक्ष की माला पर गायत्री मंत्र का कम से कम एक माला जाप नियमित रूप से करना चाहिए। शाकाहारी भोजन करना चाहिए और ईश्वर में विश्वास करना चाहिए।

वृष लग्न की पत्रिका

लग्नेश शुक्र षष्ठेश भी है जो चतुर्थ भाव में वक्री होकर बैठे हैं। मार्केश मंगल अष्टमेश गुरु और केतु के डिस्पोजिटर होकर द्वादशेश होकर नीच के होकर कर्क राशि में बैठे हैं और शनि से दृष्ट है और कर्क राशि के स्वामी चंद्र लग्न में राहु केतू अक्ष पर हैं। इस जातिका को राहु केतु की दशा में 2013-2014 के मध्य ब्रेस्ट कैंसर डायग्नोज हुआ।

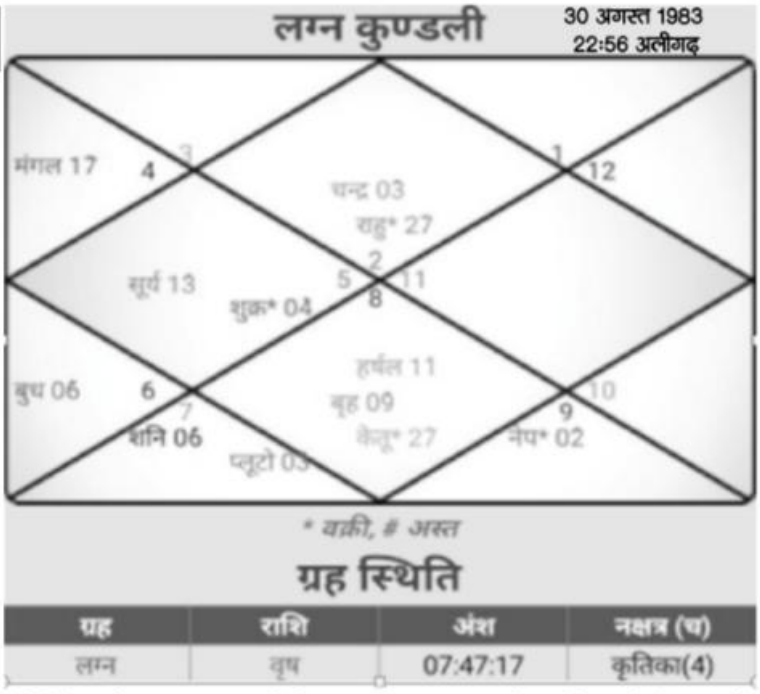

* वक्री, # अस्त

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र (च)
लग्न	वृष	07:47:17	कृतिका(4)

वृश्चिक लग्न की पत्रिका

मंगल अष्टम भाव में अष्टमेश बुध के साथ, केतु के डिस्पोजिटर सूर्य के साथ। मंगल यहाँ षष्ठेश भी है। छठे भाव में अकारक शनि हैं जो कि राहु के डिस्पोजिटर हैं। मिथुन राशि और बुध पर मंगल शनि राहु का प्रभाव। जातिका को गले का कैंसर हुआ लेकिन गुरु की दृष्टि के कारण ठीक भी हो गया।

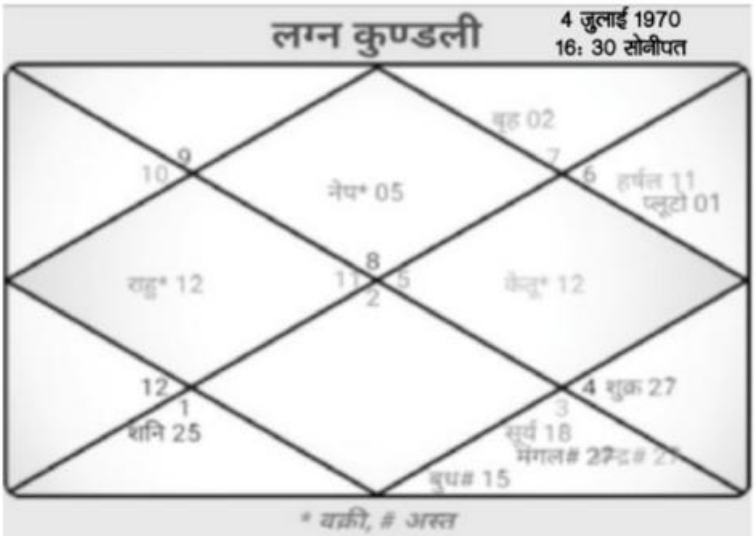

* वक्री, # अस्त

ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र (च)
लग्न	वृश्चिक	10:23:31	अनुराधा(3)